Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-III MARCH 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

दिलित आत्मकथा

डॉ.ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
हिंदी विभाग
स्वा.सावरकर महाविद्यालय, बीड. जि.बीड (महाराष्ट्र)

दलित साहित्य को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने में अनुवाद की अहम् भूमिका है । 'अकूत', 'पराया', 'छोरा कोल्हाटी का', 'यादो के पंछी', 'जीवन हमारा', 'अक्करमाशी', 'उच्चका', 'तराल-अँतराल', आदि आत्मकथाएँ अंग्रेजी में अनुवादित होकर पूरे विश्व में चर्चा का विषय बन गयी है । डॉ.नरेन्द्र जाधव की कृति 'आम्ही आणि आमचा बाप' अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश आदि भाषाओं में अनुवादित हुई है । इन अनुदित कृतियों ने दुनिया के पाठकों को आकर्षित किया है । इन कृतियों का प्रभाव ग्रहण कर दुनिया के अनेक देशों में दलित साहित्य निर्मित हो रहा है । भारतीय साहित्य की यह एक बहुत बडी देन मानी जाती है । इस संबंध में यह भी कम महत्त्वपूर्ण नही है कि जिस साहित्य कृतियों का प्रारंभ में विरोध किया था, वही कृतियाँ आज भारतीय साहित्य की प्रतिनिधी कृतियाँ मानी जाने लगी हैं । इस संदर्भ में श्यौराज सिंह बेचैन ने ठीक ही लिखा है" भारत के दलित साहित्य ने आज अमेरिका, इग्लैण्ड, कॅनडा आदि देशों के शोधकर्ताओं का ध्यान खींचा है ।"[१]

विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में मराठी की दलित आत्मकथाओं पर अनुसंधान का कार्य हो रहा है । दलित साहित्य विश्वफलक पर अपनी छबी बनाने में सफल रहा है । 'भोगे सच को'दलित साहित्य ही नहीं बल्कि विश्व साहित्यकारों को भी अपना सच लगने लगा है और इसी अनुभूति के कारण, संवेदना के ज्ञान के धरातल पर यह साहित्य विश्व साहित्य बन गया है ।

लक्ष्मण माने ने इस साहित्य के विस्तार के संबंध में ठिक ही लिखा है कि- "जिस साहित्य के कारण समग्र मराठी विश्व में हलचल मची, बहस हुई, प्रस्थापितों व्दारा विरोध हुआ, स्वकीय, सजातीय, मध्यवर्गियों ने भी अपनी खीझ व्यक्त की, इन आत्मकथाओं ने यहाँ की व्यवस्था का सारा किचड विश्व के सामने रखा, अछूत, पराया, उचक्का, तराल-अंतराल आदि मराठी ग्रंथों ने बिक्री के रेकॉर्डस तो तोडे ही साथ ही मराठी भाषा को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई ।"[२]

दलित साहित्य अपना प्रादेशिक दायरा तोडकर अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य एवं समाज को प्रभावित कर रहा है । यह साहित्य भारतीय भाषाओं में विशेषत: हिन्दी में अनुवादित होकर अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं अंग्रेजी, जर्मनी स्पेनिश आदि में अनुवादित हुआ है । यह साहित्य केवल पुस्तकों के माध्यम से ही विश्व स्तर पर नहीं पहुँचा है, बल्कि इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय गोष्टीयों, विश्वसम्मेलनों, दलितों के लिए कार्य करनेवाली विविध संस्थाओं, समाजसेवी संगठनों आदि के व्दारा भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचा है । दलित साहित्य की आवाज आज भारत में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भी सूनी जा सकती है । लंदन में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में दलित साहित्य पर कई शोध प्रबन्ध किए गए । दलित साहित्य आज विविध माध्यमों व्दारा वैश्विक प्रभाव निर्माण कर रहा है ।

आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में दलित साहित्य पाठ्यक्रम के लिए रखा हुआ विषय है । अनेक देशों के छात्र इस विषय में अनुसंधान भी कर रहे हैं इसके कारण नयी-नयी बातें सामने आ रही है । अगले एक-दो दशक में विश्व के दलित लेखक संगठित प्रयासो के चलते स्थापित हो जाएँगे और वे पाठ्य पुस्तकों का विषय बनेंगे और जन-संचार माध्यमो व्दारा इनकी रचनाएँ पूरे विश्व में पहुँचेगी ।

दलित साहित्य के संदर्भ में हम कह सकते है कि किसी भी अभिव्यक्ति को बहुत अधिक काल तक कोई दबा नहीं सकता। आज दलित साहित्य विविध साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्त होकर संपूर्ण विश्व में समर्थन प्राप्त कर रहा है।

"मराठी की दलित आत्मकथाओं में डॉ.आंबेडकर की 'मी कसा झालो' (मै कसे बना), दयाराम पवार कृत 'अछूत' शंकरराव खरात कृत 'तरल-अंतराल', प्र.ई.सोनकांबळे कृत 'यादों के पंछी', लक्ष्मण माने कृत 'पराया', लक्ष्मण गायकवाड कृत 'उठाईगीरी', शरणकुमार लिम्बाले कृत 'अक्करमाशी', महत्तपूर्ण स्थान रखती है, ये आत्मकथाएँ न सिर्फ मराठी

साहित्य अपितु समूचे भारतीय दलित साहित्य को नई दिशा प्रदान करती है, मराठी भाषी दलित स्त्रियों ने भी आत्मकथा लिखने का साहस किया, जिसके फलस्वरुप बेबी कांबळे कृत 'जीवन हमारा', उर्मिला पवार कृत 'आयदान', कौशल्या बेसंत्रीकृत 'दोहरा अभिशाप', जैसी पीडा में पगी रचनाएँ हमारे सामने आती है ।"[३]

मराठी की दलित आत्मकथाओं में पुरुष आत्मकथाकारों के साथ-साथ महिलांओ ने भी अपनी आत्मकथा के माध्यम से दलित महिलाओं पर होने वाले अन्याय, अत्याचार का वास्तविक और जीवंत वर्णन किया है जो पाठको को अंतर्मुख कर देता है। केवल सामाजिक अन्याय-अत्याचार अंकित करना ही इनका लक्ष नहीं बल्कि उसके खिलाफ विद्रोह व्यक्त करना भी लक्ष है । इसलिए यह साहित्य-सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक दृष्टि के साथ ही साथ भारतीय दलित साहित्य को समझने में उपयोगी, सिध्द हुआ है ।

"आधुनिक दलित साहित्य ने समाज से बहिष्कृत, उपेक्षित, अस्पृश्य पद दलितों की व्यथा, वेदना, यातना को वाणी प्रदान की है । स्वातंत्र्य मूल्यों की प्रतिष्ठा के व्दारा इस साहित्य ने दलित वर्ग की अस्मिता की खोज की है । यह अस्मिता ही इस साहित्य का विस्फोट रुप है । दलित साहित्य ने सर्वप्रथम कलावादी और सौंदर्यवादी दृष्टियों के स्थानपर नये सामाजिक यथार्थ की पहचान कराई है । 'भोगे सच का' सीधा सीधा माध्यम भाषा बनी है, जो आवरण विहीन होकर व्यक्त हुई है ।"[४]

"दलित साहित्य तो स्वानुभूतिपर आधारित एक ऐसे वर्ग की दु:ख,दर्द,सामाजिक बहिष्कार की पीडा को झेलने वाले दलितों की बेचैनी उन्हीं के अपने दिए हुए अभिव्यक्ति है जिसमें मानवीय संवेदना की पराकाष्ठा को रेखांकित किया जा सकता है। दलित साहित्य को इन्सानियत और मानवीय संवेदना को जगानेवाला साहित्य कहना अधिक उपयुक्त होगा ।"[५]

विश्व में शोषितों और गुलामों का एक दूसरा वर्ग भी है जिसे 'हब्सी' या 'निग्रो' कहा जाता है । उनका अपना साहित्य भी अलग है जिसे ब्लॅक लिटरेचर' कहा जाता है । कुछ लोग 'निग्रो साहित्य' और 'दलित साहित्य' को एक सा मानते है लेकिन दलितो की सामाजिक समस्या और निग्रो समाज की अपेक्षा भिन्न और व्यापक है । निग्रो साहित्य की अपेक्षा मुक्ति की मांग है और दलित साहित्य की अपेक्षा 'मानवता' है । आज इस विचारधारा की विश्वस्तर पर तुलनात्मक चर्चा हो रही है ।

दलित आत्मकथाएँ समाज और पाठकों के सम्मुख कुछ गहरे और गंभीर प्रश्न खडे करने में सहाय्यक सिध्द हुई हैं जैसे- दलितों की आत्मकथा में शिक्षा एक जीवन का आवश्यक अंग है वर्ना विकास संभव नही..

"दलित साहित्य की दुनिया भी दलित जीवन की तरह प्रताडिप, शोषित और उपेक्षित है" ।[६]

मराठी दलित साहित्य का निर्माण डॉ.बाबासाहब के विचारों के आधार पर हुआ है । विद्रोह और नकार इस साहित्य के दो मुख्य तत्त्व हैं । इस दलित साहित्य के कारण एक नयी अनुभूति देखने को मिलती है । इस नयी अनुभूति के कारण दलित साहित्य विश्व-मानसपटल पर प्रभाव निर्माण करने की दृष्टि से सफल रहा है । अब केवल भारत में ही नही तो दुनिया के अनेक देशों मे दलित साहित्य का सृजन हो रहा है ।

दलित साहित्य को विश्वस्तर पहूँचाने में अहम भूमिका अनुवादक की रही है । अनुवादक भाषा के साथ-साथ संस्कृति, जीवन, समाज-व्यवस्था, क्षेत्रीय और विदेशी चेतना और जनजीवन की मानसिकता को जानकर ही स्वतांतर्गत सारे संदर्भा को सही अर्थ ग्रहण कर सफल और कार्यनीष्ठ सृजनात्मकता के साथ वैश्विक भाव भूमीपर दलित साहित्य को पहूँचा पाया है ।

संदर्भ :

१. हंस, संपा. राजेंन्द्र यादव अगस्त २००४, पृ.१०
२. दलित साहित्य, संपा.शरणकुमार लिंबाले, पृ.२५८
३. हंस, संपा.राजेन्द्र यादव, अप्रैल २०११, पृ.३७
४. हिन्दी और मराठी का दलित साहित्य, डॉ.सुनीता साखरे, पृ.७
५. नव-निकष, संपा.डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय जून २०११, पृ.६९
६. अनभै, संपा.रतनकुमार पांडेय, पृ.२९